रेखाचित्रों की बदलती भूमिका

राजेश कुमार निमेश*

इस आलेख को लिखने का उद्देश्य अध्यापकों व रेखाचित्र के क्षेत्र में रुचि रखने वाले बच्चों को रेखाचित्र की परिभाषा, उसका इतिहास, उद्देश्य, प्रकार, इसमें नयी तकनीक का समावेश, रेखाचित्रों की शैली, बाल साहित्य में रेखाचित्रों के महत्त्व व उपयोगिता के साथ-साथ इस क्षेत्र में व्यावसायिक संभावनाओं पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। इस आलेख को पढ़ने के बाद पाठक यह निर्णय लेने में सक्षम होंगे कि उन्हें अगर रेखाचित्रकार बनना है तो रेखाचित्रण के किस क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करें। इस आलेख के अंतर्गत रेखाचित्रण की बारीकियों पर विस्तार से चर्चा की गई है, तथा रेखाचित्रकार के रूप में बच्चों के समक्ष रेखाचित्रों की उपयोगिता के पहलुओं से अवगत कराना है।

किसी उद्देश्य के लिए किसी भी धरातल पर उकेरी या बनाई गई आकृतियों को रेखाचित्र कहते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य भावों की अभिव्यक्ति करना होता है। सही मायने में रेखाचित्रों को व्यक्त करने के लिए शब्दों की आवश्यकता नहीं होती और वही रेखाचित्र सफल होते हैं जो भावों, विचारों व संकल्पनाओं का संचरण स्वत: ही करते हैं।

पुराने समय में रेखाचित्र रोजमर्रा की वस्तुओं पर बनाए जाते थे लेकिन आज इसका विषय क्षेत्र काफी बढ़ गया है। यह समय बिताने या शौक पूरा करने की कला न होकर व्यावसायिक अथवा रोज़ी-रोटी कमाने की कला हो गई है।

रेखाचित्रों के माध्यम से किसी भी विषय को आसानी से समझा जा सकता है। रेखाचित्रों की सहायता से हम ऐतिहासिक तथ्यों, शारीरिक रचनाओं, तकनीकी ज्ञान एवं अन्य विषयों को आसानी से समझ सकते हैं।

रेखाचित्र व उनका प्रभाव

रेखाचित्रकार का उद्देश्य सर्वदा भावों को चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करना होता है और

* *असिस्टेंट प्रोफेसर*, सी.आई.ई.टी, एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली -16

Ch-4.indd 75 5/20/2014 9:47:31 AM

वह इस कार्य में किस हद तक सफल होते हैं इसका पता उनके द्वारा बनाए चित्रों को देखकर लगाया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर, जब हम पुस्तक के पन्ने पलटते हैं तो हमारा ध्यान अनायास ही किसी रेखाचित्र पर जाता है जो किसी भी आलेख को समझने या रोचक बनाने में सहायक होता है। यहाँ तक कि पूरी कहानी रेखाचित्रों पर आधारित हो सकती है जिसमें चित्रकार कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण करता है और उसके मन में कहानी का क्या रूप है, पात्र कैसे हैं? इसका पता चलता है। चित्रकार प्रकाश, छाया और रंगों की सहायता से कभी-कभी जीवित पात्र का निर्माण करता है। वह पाठक के मन को स्थिर करता है और कहानी के विचार एवं भावनाओं को जानने में मदद करता है।

हर चित्र का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है। जब भी किसी चित्र का जन्म होता है तो वह चित्र अपने अनंत सौंदर्य के साथ जन्म लेता है। वैसा चित्र न तो पहले बना होता है और न भविष्य में ही बन सकता है। वह ढली हुई वस्तु की तरह एक जैसा नहीं निकलता। अत: सार यह है कि अगर किसी वस्तु का संश्लेषण होकर वह वस्तु चित्रित हुई है तो वह अपना एक विशिष्ट रूप लेकर दर्शक के सम्मुख प्रकट होती है। अत: आधुनिक युग में हमें आवश्यकता है तरह-तरह से देखने-परखने वाली दृष्टियों की, नवीन एवं भिन्न-भिन्न विधियों की तथा विश्लेषणात्मक उपकरणों की जिसमें जब किसी भी विषय को चित्रित किया जाए, वह विषय अपने महत्त्व एवं गुण के साथ प्रभावशाली ढंग से प्रकट हो। बालक की कलाकृति की सबसे सुंदर चीज़ उसकी गलतियाँ हैं और जितना इन गलतियों को शिक्षक सुधारता जाएगा उतनी ही बेजान, मंद और व्यक्तित्वहीन वह कृति बन जाएगी।

अनेक अध्ययनों के आधार पर पाया गया है कि कला विद्यालयीय पाठ्यक्रम के गणित, विज्ञान और अन्य विषयों से अधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में, अन्वेषकों ने अन्वेषण के आधार पर पता लगाया है कि कला की अनुपस्थिति बालकों के मस्तिष्क के विकास को अवरुद्ध कर सकती है।

कला सीखने का मतलब केवल हाथ के काम में दक्षता हासिल करना नहीं होता। कला शिक्षा के पीछे व्यक्ति के चरित्र, उसके सामाजिक-बोध और सौंदर्य-बोध का विकास करने का उद्देश्य होता है। कला शिक्षा में हाथ का काम कला कौशल तो साधन मात्र है, साध्य तो गुण विकास है।

आजकल रेखाचित्रों की मांग बढ़ी है, इसका एक मात्र कारण यह है कि पुस्तकों, पत्रिकाओं, फिल्म एवं विज्ञापनों में स्टोरी बोर्ड बनाते समय रेखाचित्रों की सहायता ली जाती है। एनीमेशन फिल्म तो पूरी ही रेखाचित्रों पर आधारित होती है, जिसमें एक साथ कई कलाकार कार्य करते हैं। इसमें दो राय नहीं कि रेखाचित्र लिखे हुए शब्दों से कहीं ज़्यादा प्रभाव छोड़ते हैं। रेखाचित्रों के क्षेत्र में कई आयाम हैं। इसीलिए जो चित्रकार रेखाचित्र द्वारा प्रभावशाली ढंग से अपनी बात

या विषय को रखता है, उनके लिए अवसरों की कोई कमी नहीं है।

इतिहास

माना जाता है कि रेखाचित्रों का इतिहास इतना पुराना है, जितना पाषाण युग का मानव, जहाँ चित्रों को गुफाओं की दीवारों और पेड़ों की छाल पर गोदकर भावों की अभिव्यक्ति की जाती थी। जन-जातीय समुदाय में इस प्रकार की कला मूलरूप में प्रमाण के रूप में है, जो न केवल आकृतियों को गुफाओं की दीवारों पर बनाते थे अपितु अपने आपको रंग भी लिया करते थे

जिनका मुख्य उद्देश्य दिग्दर्शन (Visual Presentation) प्रस्तुतिकरण होता था। पुराने समय में रेखाचित्र रोजमर्रा की वस्तुओं या विषयों पर बनाए जाते थे जिनसे उनके जीवन के जीने के तरीकों व समाज में उनके आपसी संबंधों का पता चलता है। इस प्रकार के रेखाचित्र गुफाओं की दीवारों पर मिल जाते हैं। प्रागैतिहासिक काल की कला के संबंध में प्राचीन गुफाएँ और चट्टानें आदि ही ऐसे प्रमाण हैं जिनसे इस पर कुछ प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार के अनेक चित्रों से यह स्पष्ट है कि अब तक मानव सभ्यता ने कितनी प्रगति की है। गुफाओं और चट्टानों में अंकित चित्रों को देखकर यह ज्ञात होता है कि मनुष्य ने अपनी चेष्टाओं, रुचियों और आकांक्षाओं को प्रकट करने के लिए ललित कलाओं का प्रयोग किया। स्पेन, फ्रांस, दक्षिणी रोडेशिया, पेरू, अलास्का, लाओस, मध्य एशिया और भारत आदि अनेक देशों में आदिकाल की अनेक गुफाएँ प्राप्त हुई हैं जिनमें विभिन्न प्रकार के चित्र अंकित हैं। अनेक विद्वानों ने इनका समय ईसा पूर्व 50,000 से लेकर 10,000 वर्ष तक रखा है। ये अवशेष उस समय के दिखते हैं, जब मनुष्य ने आदिम पाषाण युग से निकलकर नवपाषाण काल में प्रवेश किया था।

मनुष्य के आदि प्रादुर्भाव का काल, समय और परिस्थितियों का ज्ञान जिस प्रकार अभी तक नहीं हो पाया, उसी प्रकार यह कहना भी बड़ा कठिन है कि कला का उदय कब हुआ। आज हमारे पास उन प्रमाणों का सर्वथा अभाव है, जिनके आधार पर हम कला के उदय काल के बारे में कुछ कह सकें।

शायद भावों की अभिव्यक्ति के लिए चित्रकला का सबसे पुराना रूप दिग्दर्शन कला है। आदिमानव पत्थरों पर रेखाएँ खींचकर लम्बे समय तक संभालता था। इन आदि काल के चित्रों को संभाल कर ही नहीं रखता था बल्कि वह सृजन करने में भी सक्षम था।

रेखाचित्रों के उद्देश्य

रेखाचित्रकला चित्रों द्वारा कहानी-वाचन या कहने की कला है जो शब्दों को आसानी से

रेखाचित्रों में अनूदित करती है जिसका प्रभाव शीघ्र होता है। इनका उपयोग कई उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

- वैज्ञानिक तथ्यों के लिए
- नये उत्पाद के लिए
- कविता एवं कहानी के लिए
- व्यक्तिगत विचारों की अभिव्यक्ति के लिए

रेखाचित्रों के प्रकार

रेखाचित्र को हम दो भागों में बाँट सकते हैं, जैसे–

1. *तकनीकी रेखाचित्र* – तकनीकी प्रवृत्ति वाले विषयों को रेखाचित्रों के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है जिसके अंतर्गत हम अभियांत्रिकी रेखाचित्र, वास्तुकारी रेखाचित्र, ऐनोटॉमी रेखाचित्र व वस्तुओं को समझने हेतु बनाए जाने वाले रेखाचित्रों को शामिल कर सकते हैं।
2. *गैर-तकनीकी रेखाचित्र* – गैर-तकनीकी का उपयोग मुख्य रूप से कहानी, इमेजिनेशन व विचारों की अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है।

वास्तुकारी रेखाचित्र

वास्तुकारी के लिए बनाए जाने वाले रेखाचित्र मुख्य रूप से पैमाने की सहायता से बनाए जाते हैं। इस प्रकार के रेखाचित्र अक्सर ऐतिहासिक आलेखों में मिलते हैं, जो मुख्यत: भवनों या इमारतों को दिखाते हैं। इनमें रेखाएँ नपी-तुली होती हैं। इस प्रकार के चित्र बनाने के लिए संदर्भों की ज़रूरत होती है।

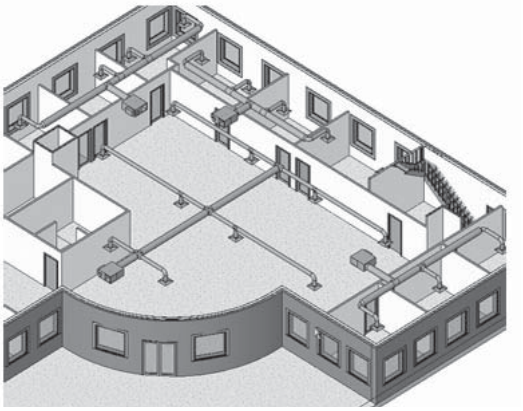

वास्तुकारी संबंधित चित्र उस घर का तकनीकी चित्र होता है, जो घर वास्तुकारी के क्षेत्र में आता है। इस प्रकार के चित्र वास्तुकार द्वारा विभिन्न कार्यों के लिए बनाए जाते हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

- पहले से निर्मित भवन का लेख प्रमाण तैयार करने के लिए।
- नए भवन का वास्तुचित्र तैयार करने के लिए।
- विचार एवं अवधारणा के संप्रेषण हेतु।
- उपभोक्ता को प्रभावित करने के लिए।

ऐनोटॉमी रेखाचित्र

ऐनोटॉमी चित्रण विशेष रूप से मानव की बाहरी व आंतरिक शारीरिक रचना का चित्रण करना है। इस प्रकार के रेखाचित्र शरीर के

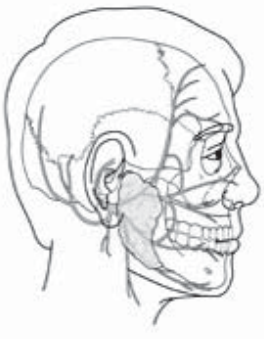

प्रत्येक अंग की बनावट व उसके क्रियाकलापों को समझने में विज्ञान एवं मेडिकल के छात्रों की विशेष रूप से बहुत मदद करते हैं। इस प्रकार के रेखाचित्र बनाने के लिए रेखाचित्रकार को विशेष प्रकार के प्रशिक्षण व ज्ञान की आवश्यकता होती है।

अभियांत्रिकी (Mechanical) रेखाचित्र

कुछ रेखाचित्र वस्तुओं, जैसे– बिजली की मोटर, पंखा आदि को एक-दूसरे से कैसे जोड़ते हैं या पुर्जों को जोड़कर एक संपूर्ण वस्तु कैसे बनती है, को दिखाने के लिए बनाए जाते हैं। इन रेखाचित्रों को मैकेनिक ड्रॉइंग कहते हैं। ये रेखाचित्र इंजीनियर और ड्राफ्टमैन द्वारा बनाए जाते हैं।

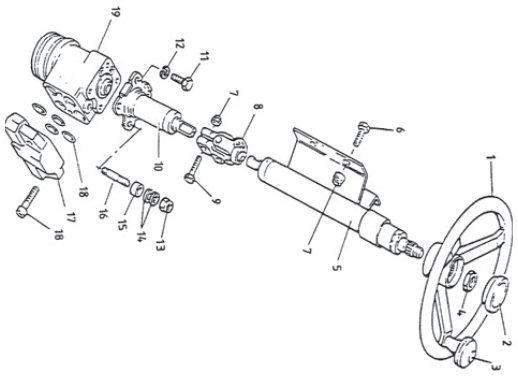

व्याख्यात्मक रेखाचित्र

वस्तुओं की व्याख्या करने के लिए इनका उपयोग किया जाता है। इसके द्वारा परमाणु का एक अंश भी दिखाया जा सकता है और ब्रह्माण्ड को भी दिखाया जा सकता है। इसके द्वारा देश की जलवायु या विभिन्न प्रकार के

रेखाचित्रों द्वारा छोटे-से-छोटा एवं बड़े-से-बड़े भाग का वर्णन किया जा सकता है। इसी तरह कभी-कभी बड़ी वस्तुओं, जैसे–जिला, राज्य, देश, महाद्वीप और महासागर के बारे में जानने के लिए रेखाचित्रों की सहायता लेनी पड़ती है। इस प्रकार के नक्शों के रेखाचित्र कार्टोग्राफ़र द्वारा भी बनाए जाते हैं।

वस्तुओं को समझने हेतु

एक प्रकार के रेखाचित्र को वस्तुओं को समझने के लिए उन्हें उनके वास्तविक रूप से कई गुना बड़ा करके बनाया जाता है ताकि आसानी से उसके प्रत्येक भाग का अध्ययन किया जा सके।

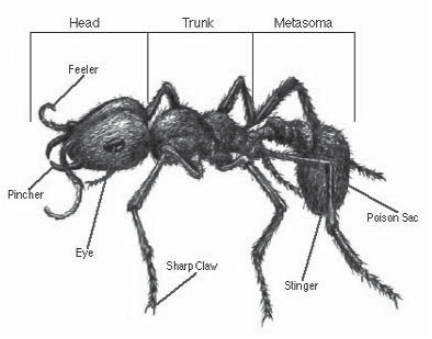

कभी-कभी हम वास्तविक वस्तु देखकर उसके बारे में नहीं समझ पाते क्योंकि वह इतनी छोटी होती है कि उसे नंगी आँखों से नहीं देख पाते। रेखाचित्रों की सहायता से हम उस वस्तु को आसानी से समझ सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, चींटी एवं उसके भागों को देखना बहुत ही मुश्किल होता है, इसलिए हमें उसका रेखाचित्र बनाकर समझना पड़ता है।

कहानी वर्णन हेतु रेखाचित्र

रेखाचित्रों के बिना पुस्तकों में छिपे ज्ञान का अध्ययन करना उतना ही कठिन है जितना बंद आँखों से संसार को देखना। शायद यही तथ्य पुस्तक में रेखाचित्रों के अस्तित्व को बनाने में सहायक रहे होंगे।

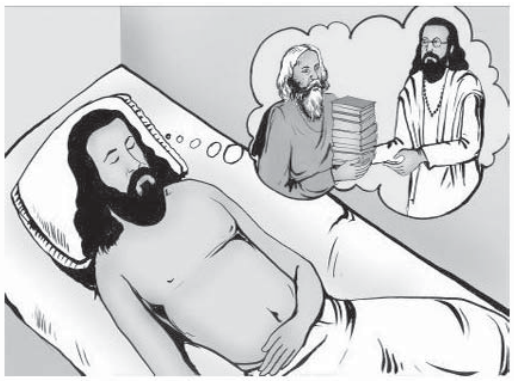

लगभग 15वीं सदी से पहले पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थीं। 476-1492 ईसवी के मध्य में रेखाचित्र पुस्तकों में दिखाई दिए। इन पुस्तकों में पृष्ठ के रूप में बकरी व गाय के चमड़े का उपयोग किया जाता था तथा रेखाचित्रों को सोने की परत से सजाया जाता था। लगभग 15वीं सदी से लेकर 18वीं सदी के बीच पुस्तक वुडकट में उपलब्ध होने लगी। तथा इसको दुबारा छापने में एंग्रेविंग और एचिंग का उपयोग भी शुरू हुआ।

कुछ रेखाचित्र कहानी, कविताओं, धार्मिक ग्रंथों, यात्रा वर्णन, आदि में देने के लिए बनाए जाते हैं जिन्हें हम पत्रिकाओं और अपनी पाठ्यपुस्तकों में भी देखते हैं।

फैशन रेखाचित्र

फैशन रेखाचित्र फैशन के संचार हेतु बनाए जाते हैं जो ड्रॉइंग और पेंटिंग से प्रजनित या उत्पन्न होते हैं। आमतौर पर फैशन पत्रिकाओं में एक भाग के रूप में संपादकीय या विज्ञापन के उद्देश्य से और फैशन निर्माताओं, फैशन बुटीक और डिपार्टमेंटल स्टोर को बढ़ावा देने के प्रयोजन से बनाए जाते हैं।

पोशाक चित्रण का इतिहास काफी पुराना माना जाता है। फैशन डिज़ाइन में रेखाचित्र का उपयोग बहुतायत में होता है। जब भी नयी

पोशाक का डिज़ाइन या निर्माण करना होता है, तो पहले उसे स्केच पेपर पर बनाकर देखते हैं। तथा बाकायदा मानव आकृति बनाकर वस्त्रों के कई रेखाचित्र या डिज़ाइन बनाते हैं, जिससे उसके आउटलुक का पता चलता है।

एनिमेशन रेखाचित्र

एनिमेशन एक प्रकार से सुंदर रेखाचित्रों का शृंखलात्मक गठबंधन है, जो एक-एक करके हमारी आँखों के सामने से गुज़रते हैं जिससे हमें उनमें गति का आभास होता है।

आजकल एनिमेशन कई प्रकार से बनाई जाती है। ज़रूरी नहीं कि इसमें रेखाचित्रों का उपयोग ही हो, जैसे– मॉडल एनिमेशन जिसमें पात्रों एवं दृश्यों के मॉडल बना लिए जाते हैं तथा बाद में स्टॉप मोशन तकनीक द्वारा एनिमेशन फिल्म का निर्माण किया जाता है। परंतु इस प्रक्रिया की योजना में मॉडल के स्केच, दृश्यों के स्केच और पात्रों के स्केच बनाने की शुरूआत रेखाचित्रों से ही होती है।

जब हम एनिमेशन की बात करते हैं, तो सर्वप्रथम हमारे ज़ेहन में वॉल्ट डिज़्नी का नाम अनायास ही आ जाता है। क्योंकि एनिमेशन में

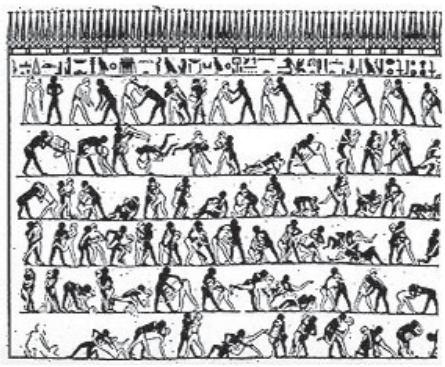

क्रांतिकारी परिवर्तन उनके द्वारा ही लाए गए। उनके समय में जिस तकनीक का इस्तेमाल होता था, उसे सेल एनिमेशन तकनीक कहते हैं। इसके अंतर्गत हर चित्र को एक सेल (पारदर्शी सीट) पर स्याही व रंगों की सहायता से शृंखला में बनाते हैं।

रेखाचित्रों के बिना एनिमेशन फिल्म बनाने की कल्पना करना भी असंभव है। क्योंकि एक-एक रेखाचित्र बनकर ही पूरी एनिमेशन फिल्म का निर्माण होता है। जब एनिमेशन के लिए आलेख लिख लिया जाता है, तो रेखाचित्रों की सहायता से स्टोरी बोर्ड बनाया जाता है। कहानी में मुख्य-मुख्य परिस्थितियों (Key frames) का क्रमानुसार चित्रांकन किया जाता

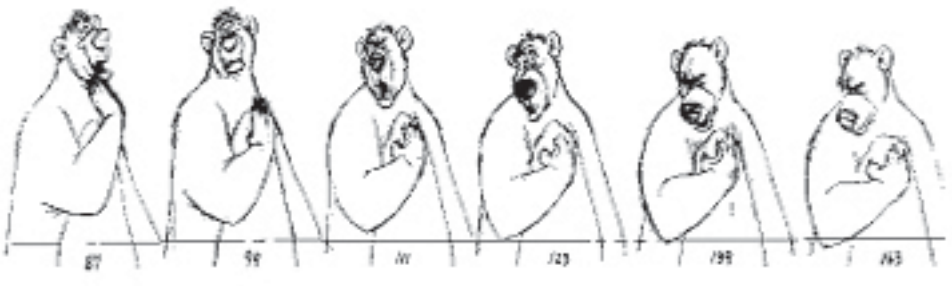

है। चित्रों के दाईं ओर संवाद लिखे जाते हैं जो रेखाचित्रों की सहायता करते हैं, जिसे स्टोरी बोर्ड कहते हैं। हर एक क्रिया के लिए अलग-अलग रेखाचित्र बनाए जाते हैं।

कार्टून रेखाचित्र

कार्टून रेखाचित्र एक प्रकार के हास्यास्पद रेखाचित्र होते हैं, जिनका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन करना होता है। इस प्रकार के क्रियाकलापों को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर हास्यास्पद तरीके से प्रस्तुत करते हैं कि व्यक्ति किस तरह महसूस एवं प्रतिक्रिया करता है। ऐसे रेखाचित्र गेग कार्टून,

संपादकीय कार्टून, कॉमिक्स स्ट्रिप, कॉमिक पुस्तक, ग्राफिक नॉवेल और एनिमेशन में देखे जा सकते हैं। कार्टून के रेखाचित्र सर्वप्रथम पेंसिल की सहायता से पेपर पर बनाए जाते हैं बाद में इन्हें स्याही या रंगों द्वारा पूरा किया जाता है। आजकल कार्टूनिस्ट परंपरागत तरीके छोड़कर डिजिटल मीडिया का सहारा लेते हैं जिससे छपाई या इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यमों में आसानी से उपयोग किया जा सकता है।

कैरीकेचर

कैरीकेचर इतालवी शब्द 'caricare' से लिया गया है जिसका अर्थ व्यक्ति का भावात्मक चित्रण है। यह कैरीकेचर अतिरंजित या उसका विकृत रूप हो सकता है जिसे आसानी से पहचाना जा सकता है। साहित्य में कैरीकेचर का अर्थ व्यक्ति का संक्षिप्त ब्यौरा देना है।

कैरीकेचर अपमान या मानार्थ हो सकते हैं। यह राजनैतिक उद्देश्य के लिए व मनोरंजन के लिए भी बनाए जाते हैं।

कैरीकेचर पत्र-पत्रिकाओं में संपादकीय के लिए, कार्टून फिल्मों के लिए, तथा फिल्मी सितारों के कैरीकेचर मनोरंजन पत्रिकाओं में पाए जाते हैं।

बाल साहित्य में रेखाचित्र

बाल साहित्य का नाम लेते ही हमारे सामने बच्चे और चित्रों की दुनिया आ जाती है। दोनों एक दूसरे के पर्याय माने जा सकते हैं, क्योंकि

रंग-बिरंगे रेखाचित्र अनायास ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित कर लेते हैं जिससे विषय-वस्तु बच्चों को रोचक एवं सरल लगने लगती है। अगर हम पाठ्यपुस्तकों की बात करें तो आज किसी भी पाठ्यपुस्तक को उठाकर देखने पर हम पाएँगे कि इनके बिना पुस्तकों का कोई भी वजूद नहीं है। आज विश्व का कोई भी बाल साहित्य चित्रों से अछूता नहीं है। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण है कि बच्चे रेखाचित्रों के माध्यम से विषय को सरलता से समझ लेते हैं।

रेखाचित्रों में परंपरागत तकनीकी का उपयोग

परंपरागत रेखाचित्रण मुख्य रूप से जलरंग, पेन, स्याही, एयरब्रश आर्ट, तैलीय चित्र, पेस्टल कलर, वुडएनग्रेविंग, और लीनोकट के द्वारा बनाए जाते हैं। इन माध्यमों का उपयोग प्रत्येक कलाकार करता रहा है। परंपरागत रेखाचित्रों को बनाने के लिए या रेखाचित्रकार बनने के लिए किसी भी फॉर्मल शिक्षा की ज़रूरत नहीं है। फिर भी रेखाचित्रकार विद्यालय या कला विद्यालय से शिक्षा लेते हैं। जहाँ उन्हें नयी-नयी तकनीकों से अवगत कराया जाता है।

नयी तकनीक का समावेश

पत्र-पत्रिकाओं और टेलीविजन की शक्ति बड़ी तेज़ी से बढ़ती जा रही है। इसलिए रेखाचित्र की अपनी अहमियत भी बढ़ी है। फलस्वरूप कलाकार के सामने बहुत से नये अवसरों के साथ-साथ रेखाचित्रों के निर्माण में नयी-नयी तकनीक का उपयोग भी बड़ी तेजी से बढ़ा है।

अब रेखाचित्र पेंसिल, चारकोल, स्याही या

तूलिका की सहायता से ही नहीं बनाए जाते अपितु, समयानुसार इन्हें बनाने की तकनीक तथा सामग्री में काफी परिवर्तन आया है जिसके माध्यम से रेखाचित्रों के निर्माण में निम्नलिखित कार्य करने में काफी मदद मिलने लगी:

- प्रतिलिपियाँ बनाने में
- रंगों का चयन करने में
- मूलचित्रों में बदलाव करने में
- विभिन्न प्रकार के प्रभाव पैदा करने में
- तकनीकी रेखाचित्रों को बनाने में

कंप्यूटर

आज रेखाचित्रों को बनाने के लिए कंप्यूटर की सहायता ली जाती है जिसमें नये-नये सॉफ्टवेयर जैसे- एडोब इलस्ट्रेटर, पेंटर क्लासिक, एडोब फोटोशॉप, फ्लैश, कोरल ड्रा, 3डी मैक्स और माया सॉफ्टवेयर की सहायता से दो आयामी एवं तीन आयामी रेखाचित्र बनाए जाते हैं। बस आपको डिजिटल पेंट टेबलेट और पेन की सहायता लेनी होगी। साथ ही रंगों के चयन एवं उपयोग की बहुत संभवनाएँ बढ़ी हैं। जिनका उपयोग चित्रकार अपनी सुविधा अनुसार करता है और बेहतर परिणाम पाता है।

डिजिटल टेबलेट

डिजिटल टेबलेट के आ जाने से कला की दुनिया विशेषकर रेखाचित्रकारों की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। डिजिटल टेबलेट की सहायता से रेखाचित्रों का निर्माण करना बहुत ही आसान हो जाता है। इस पर कार्य करना पेंसिल से कागज़ पर रेखाचित्र बनाने के समान है।

पेन टेबलेट से चित्रों को सुधारना व बार-बार परिवर्तन करना भी आसान होता है जबकि परंपरागत तकनीक के द्वारा यह कार्य बहुत ही मुश्किल से होता है।

स्कैनर

स्कैनर एक ऐसा इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है जिसकी सहायता से हम किसी भी चित्र या फोटो, चाहे वह श्याम-श्वेत हो या रंगीन, को आसानी से स्कैन कर लेते हैं जिसे बाद में डिजिटल रूप में कंप्यूटर पर सुरक्षित (Save) कर लिया जाता है। इन इमेजों में आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करके उपयोग किया जाता है।

रेखाचित्र बनाने के स्रोत

रेखाचित्रण के कई स्रोत हो सकते हैं जिसमें प्रकृति और वास्तविकता में संसार में जो हम देखते हैं। दूसरे, इमेजिनेशन और हमारे दिमाग में जो घटता है उदाहरण के लिए, हमने कोई दुर्घटना देखी जब हम घर आते हैं तो वह घटना बार-बार हमारे दिमाग में आती रहती है, जिसे हम रेखाचित्रों के द्वारा दर्शाते हैं। दूसरे, हम कोई

पात्र, कोई वस्तु अपनी इमेजिनेशन से सृजित करते हैं। उदाहरणार्थ, एक दैत्य, एक राक्षस आदि। रेखाचित्रों के स्रोत के रूप में निम्नलिखित बिंदु मुख्य हैं:

- हमारे जीवन में प्रतिदिन कुछ-न-कुछ घटता रहता है चाहे वह अच्छा हो या बुरा, जिससे प्रेरित होकर हम रेखाचित्र बनाते हैं।
- धार्मिक साहित्यों और ग्रंथों से प्रेरित होकर रेखाचित्र बनाते हैं।
- कहानी और कविता पर रेखाचित्र बनाते हैं।
- विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों को आधार बनाकर रेखाचित्र बनाते हैं।

शैली का विकास

चित्रकार थोड़ा बहुत अपने चित्रों में अपनी जीवन-शैली, अपने वातावरण का प्रभाव छोड़ता है। ज़्यादातर चित्रकार अपनी एक पहचान (शैली) बना लेते हैं जो उनके चित्रों से पता लगती है। वही उनकी पहचान बनती है कि अमुक चित्र अमुक चित्रकार द्वारा बनाया गया है। उदाहरण के तौर पर आर. के. लक्ष्मन, मारियों मिराण्डा, मिकी पटेल, पुलक विश्वास और सुधीर तैलंग जैसे रेखाचित्रकारों ने अपनी शैली विकसित की है, वही उनकी पहचान भी है।

प्रतियोगिता का युग

नए-नए रूपों एवं माँग के अनुसार रेखाचित्रों का सृजन करना अपने आप में एक चुनौती भरा कार्य है। प्रतियोगिता के इस युग में अपनी पहचान बनाना आपकी कार्यशैली एवं सृजनशक्ति पर बहुत हद तक निर्भर करता है। साथ ही आपके आस-पास क्या कुछ घट रहा है आदि बातों पर भी ध्यान देना चाहिए, ताकि नए-नए विषयों पर रेखाचित्रों का सृजन करने के लिए सामग्री उपलब्ध हो सके।

रेखाचित्रण में प्रतिस्पर्धा

रेखाचित्रकारों की आवश्यकता निकट भविष्य में बहुत ही बढ़ने वाली है, और जो रेखाचित्रकार डिजिटल तकनीक का उपयोग करके रेखाचित्रों का निर्माण करने में सक्षम होंगे, वही आने वाले समय में अपनी उपस्थिति का आभास कराने में सफल होंगे।

डिजिटल रेखाचित्र की सबसे ख़ास बात यह है कि इन्हें आसानी से एक जगह से दूसरी जगह सिर्फ एक पेन ड्राइव या सी.डी. की सहायता से लाया ले जाया जा सकता है साथ ही ई-मेल व एस.एम.एस. की सहायता से विश्व के किसी भी कोने में भेजा जा सकता है। डिजिटल तकनीक से बने रेखाचित्रों के नतीजे अति उत्तम होते हैं। इन सभी रेखाचित्रों का निर्माण छपाई सामग्री वाणिज्य उत्पाद और डिजिटल माध्यम के लिए होता है।

रेखाचित्रकार साधारणतया तकनीकी ज्ञान व अनुभव विश्वविद्यालय में प्राप्त करता है, जहाँ उसे विश्व में उपयोग की गई नयी-नयी तकनीकों व ज्ञान से अवगत कराया जाता है। साथ ही रेखाचित्र बनाने में नए-नए उपायों का उपयोग करना सिखाया जाता है।

रेखाचित्रण में व्यवसाय

रेखाचित्रकार रेखाचित्रों का सृजन करता है

जो विचारों, संकल्पनाओं और कहानियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह रेखाचित्र प्राय: पत्रिकाओं, किताबों और अन्य प्रकाशनों मे छापी जाती हैं। रेखाचित्रकार वाणिज्य उत्पादों जैसे ग्रीटिंग कार्ड, कैलेंडर पैकेजिंग या डिजिटल रेखाचित्रों आदि में उपयोगी होते हैं।

रेखाचित्रकार के सामने नौकरी पाने के कई अवसर होते हैं, जैसे– विज्ञापन एजेंसियों, मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनीज़, फैशन उद्योग, मेडिकल व सरकारी संस्थाओं में, जो रेखाचित्रकार डिजिटल रेखाचित्र बनाते हैं उनके लिए आज के युग में अधिक अवसर हैं साथ ही रेखाचित्रकार स्वतंत्र रहकर भी कंपनियों से काम लाकर कर सकते हैं। रेखाचित्रकार का कार्य रेखाचित्र विजुअलाइज़ करना, कार्य उत्पन्न करना व रेखाचित्रों का सृजन ग्राहक के अनुरूप करना होता है जो पूर्णत: माध्यम व तकनीक का इस्तेमाल करके रेखाचित्रों का निर्माण करते हैं, जैसे–

- *विज्ञापन या वाणिज्य चित्रण*–उत्पाद को बेचने व बढ़ावा देने में उपयोग किया जाता है।
- *संपादकीय चित्रण*– प्रकाशन में संपादकीय लेख को बढ़ावा या समर्थन देने में उपयोग किया जाता है।
- *चिकित्सा चित्रण*–शारीरिक रचना एवं सूक्ष्म जीवों के चित्रण हेतु।
- *फैशन चित्रण*–अतिश्योक्तिपूर्ण अनुपात में रेखाचित्रण करने हेतु।
- *चेहरा चित्रण*–व्यक्ति के यथार्थवादी चित्रण हेतु।
- *कैरीकेचर चित्रण*–अतिश्योक्तिपूर्ण भावों द्वारा हास्यास्पद चित्रण करना।
- *बाल साहित्य चित्रण*–एक शैली में चित्रण करना।

संस्थान

रेखाचित्रण वस्तुओं एवं विचारों को व्यक्त करने का सरल एवं सुगम माध्यम है जिसकी उपयोगिता दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। फाइन आर्ट एवं कमर्शियल आर्ट में डिग्री एवं डिप्लोमा हासिल करने के लिए देश में कई विश्वविद्यालय और संस्थाएँ हैं जो सर्टिफिकेट कोर्स भी कराती हैं, जिसका लाभ उठाया जा सकता है। इस क्षेत्र में अपना करियर बनाया जा सकता है। इन संस्थाओं से प्रशिक्षण लेने के बाद विद्यार्थी एक अच्छा रेखाचित्रकार, अच्छा कार्टूनिस्ट, अच्छा एनिमेटर बन सकता है। नीचे कुछ कला विश्वविद्यालयों के नामों की सूची दी गई है जो फाइन आर्ट में डिप्लोमा व डिग्री कोर्स करवाते हैं। इन विश्वविद्यालयों से विद्यार्थी लाभ उठा सकते हैं–

- एन.एस.डी., बड़ौदा
- ललित कला महाविद्यालय, दिल्ली
- जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी, दिल्ली
- जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई
- कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट, लखनऊ व चेन्नई
- कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, मानस गंगोत्री , मैसूर
- ए. पी. जे. कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट (गुरूनानक देव यूनिवर्सिटी), जालंधर

- शान्ति निकेतन कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, कोलकाता
- कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, शिमला.

निष्कर्ष

इसमें दो राय नहीं कि रेखाचित्र प्रत्येक विषय को समझने में हमारी मदद करते हैं। इनके द्वारा जटिल से जटिल विषय भी आसानी से समझा जा सकता है। शायद यही कारण है कि रेखाचित्रों की माँग दिन-प्रतिदिन रोजगार के अनुपात में बढ़ती जा रही है। इस माँग को पूरा करने के लिए नए-नए रेखाचित्रकार इस क्षेत्र में अपनी किस्मत आज़मा रहे हैं। प्रतिस्पर्धा के इस युग में सफलता उसे ही मिलेगी जो नयी तकनीक व सोच के साथ डिजिटल सॉफ्टवेयर का इस्तेमाल करके उत्तम-से-उत्तम परिणाम देने में सक्षम होगा। रेखाचित्रण के नए-नए क्षेत्र व नौकरी पाने के अवसरों को देखते हुए यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण न होगा कि इस क्षेत्र में भविष्य व पैसा दोनों उपलब्ध किए जा सकते हैं।

संदर्भ

प्रसाद, देवी, 2005, *शिक्षा का वाहन कला*, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

स्वामी, ई. कुमारिल, 1996, *भारतीय कला और कलाकार*, प्रकाशन विभाग, *सूचना और प्रसारण मंत्रालय*

प्रसाद, देवी, 1999, *शिक्षा का वाहन कला*, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

पाण्डेय, संध्या, पाण्डेय, आर. पी., 2007, *भारतीय कला का पुनर्जागरण एवम् चित्रकला*, मध्यप्रदेश हिन्दी अकादमी

केलर, 1961, द *आर्ट इन टीचिंग आर्ट*, यूनिवर्सिटी एट नब्रास्का प्रेस, लिनकॉन

व्हाइट, टोनी, 1986, द *एनिमेटरस वर्कबुक*, वाटसन गुप्टिल पब्लिकेशन, न्यूयार्क